भूमिका

भूमिका

साहित्य और मनुष्य का संबंध बहुत पुराना है। सिनेमा तो आधुनिक काल की देन है, पर साहित्य की एक विधा नाटक समाज में पहले से ही मौजूद थी। वैदिक काल में भी मौखिक रूप से यह मनुष्य को मनोरंजन और मार्गदर्शन के रूप में अपना योगदान देती रही है। साहित्य की महत्ता तब और बढ़ जाती है, जब यह धर्म, दर्शन और विज्ञान से जुड़कर मनुष्य के जीवन को सजाता है। साहित्य केवल हमारे प्राचीन इतिहास को आलोकित ही नहीं करता है, बल्कि भविष्य की संभावनाओं को भी दिग्दर्शित करता है।

सिनेमा दृश्य-श्रव्य माध्यम की आधुनिक विधा है। सिनेमा अपने आरंभिक काल से ही साहित्य से जुड़ा रहा है। इक्कीसवीं सदी में सिनेमा ने अभिव्यक्ति के सबसे सशक्त सृजनशील माध्यम के रूप में उभरकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। अपने शुरुआती दिनों में ही फिल्म और साहित्य में एक विशेष प्रकार का संबंध विकसित होने लगा था। साहित्य के पास जहाँ सदियों पुराना अनुभव है वहीं फिल्म में समाज में घट रहे सार्थक या निरर्थक परिवर्तनों का सरल एवं मनोरंजन रूप फिल्मों के माध्यम से मिलता है। फिल्म को भी साहित्य की भाँति समाज का आईना कहा जा सकता है।

साहित्यिक कृतियों पर बनी फिल्म एक ओर जहाँ कृति की महत्ता को प्रतिपादित करती हैं, वहीं निरक्षर या साहित्य की पहुँच से दूर रहने वालों के लिए दृश्य माध्यम उपलब्ध कराकर जनसामान्य तक कृति के लक्ष्य को पहुँचाने का कार्य करती है।

प्रस्तुत शोध साहित्य सिनेमा के बीच सहसंबंध स्थापित करना और सामाजिक जीवन में उनकी उपयोगिता एवं महत्व को समझाने का प्रयास है। साहित्य से सिनेमा रूपान्तरण में उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का अवलोकन कर साहित्यिक कृति से फिल्म निर्माण की प्रक्रिया को जानना हैं।

जिसमें पहले अध्याय के अंतर्गत साहित्य और सिनेमा के इतिहास में क्या योगदान रहा? किस तरह सिनेमा का निर्माण सर्वप्रथम साहित्यिक रचनाओं पर हुआ? सिनेमा और साहित्य दोनों के माध्यम से कितना सफल हुआ है साथ ही साहित्य का इतिहास में फिल्म निर्माण में क्या योगदान रहा इन सब चीजों का विश्लेषण किया गया है।

दूसरे अध्याय के अंतर्गत सिनेमा और साहित्य की सैद्धांतिकी क्या है? साहित्य की अपनी दृष्टि क्या है और सिनेमा की दृष्टि क्या है? इन दोनों में आपस में भिन्नता होने के बावजूद क्या-क्या समानता है। फिल्म कहां तक दर्शकों को प्रभावित करती है। साहित्य के माध्यम से उपन्यास (सारा आकाश) ने समाज में क्या योगदान दिया और साहित्य समाज पर कितना निर्भर है।

तीसरे अध्याय के अंतर्गत 'सारा आकाश' और फिल्म निर्माण प्रक्रिया में किन-किन दिक्क़तों का सामना करना पड़ा? निर्देशक एवं साहित्यकार दोनों में क्या अंतर दिखाई पड़ता है? निर्देशक ने फिल्म बनाते वक्त कौन-कौन से मुद्दों को उठाया है और कौन-कौन से मुद्दे छोड़ दिए हैं? वहीं कथाकार ने उपन्यास के माध्यम से कौन-कौन सी समस्या को उठाया है? इस अध्याय के अंतर्गत उन सभी बिंदुओं को विस्तारपूर्वक बताया गया है।

चौथे अध्याय के अंतर्गत 'सारा आकाश' फिल्म निर्माण में चुनौतियां विषय के अंतर्गत 'सारा आकाश' एवं फिल्म रूपांतरण में किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा? फिल्म निर्माण करते वक्त वह किन-किन चीजों को फिल्म के माध्यम से दर्शकों को अपने फिल्म में दिखाने की कोशिश की है? उपन्यासकार अपने कथा के माध्यम से क्या दिखाना चाहते थे? फिल्म रूपांतरण करते वक्त निर्देशक ने क्या-क्या दिखाया है? निर्देशक ने रूपांतरण में कथाकार को कितना संतुष्ट कर पाया है?

साहित्य से सिनेमा में परिवर्तन में इन सभी समस्याओं को रूपांतरण के माध्यम से प्रस्तुत शोध में दिखने का प्रयत्न किया गया है।

मैं सबसे पहले महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के प्रति आभार प्रकट करना चाहता हूँ जिन्होंने अपने प्रांगण में अवस्थित 'साहित्य विद्यापीठ' के 'हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग' के एम.फिल. 'तुलनात्मक साहित्य' में शोध कार्य करने का अवसर प्रदान किया।

साहित्य विद्यापीठ की अधिष्ठाता एवं शोध निर्देशक प्रो. प्रीति सागर के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। जिनके द्वारा प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध पूर्ण करने में हर संभव सहयोग मिला। साथ ही मैं 'हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग' के विभागाध्यक्ष प्रो. कृष्ण कुमार सिंह, डॉ. बीरपाल सिंह यादव (सहायक प्रोफेसर), डॉ. रामानुज अस्थाना (सहायक प्रोफेसर) आदि अन्य सभी गुरुजनों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिनका हर समय सहयोग मिलता रहा।

इसके साथ-साथ मैं अपने माता-पिता तथा बड़े भाई डॉ. रामानंद यादव, बड़ी बहन सुमन यादव एवं छोटी बहन रानी यादव के प्रति आभार प्रकट करता हूँ। जिन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया और घर की जिम्मेदारियों से मुक्त रखा एवं प्रारंभ से अंत तक समुचित सुविधाएँ उपलब्ध कराकर मुझे समय-समय पर उत्साहवर्धन एवं शक्ति दी,जिससे मेरा शोध कार्य सफल हो पाया।

मैं विशेष रूप से बड़े भाई डॉ.अशोक यादव, डॉ. प्रीति हुड्डा, सुदामा यादव, ज्ञानसिंह यादव, जुगल किशोर चौधरी, आरती शर्मा, सुनीता, शशिकान्त यादव, विजय यादव, नीलम यादव, डॉ. रामानुज यादव, डॉ. अजय यादव, डॉ. राजीव यादव, डॉ रजनीश यादव, मिथलेश कुमार यादव, कुमार रितेश रंजन, राजू कुमार, अभय जैन, सत्यवंत यादव, अरूण सोनी, आशुतोष कुमार, शैंकी जैन,

विष्णु कुमार, गोविंद वर्मा, रवीन्द्र कुमार यादव, जोगदंड शिवाजी, निशांत मिश्रा का हृदय से आभारी हूँ जिन लोगों का हर समय अपेक्षित सहयोग रहा। जिससे मेरा शोध कार्य सही ढंग से हो पाया।

अंत में इस लघु शोध-प्रबंध को पूर्ण कराने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जिन मित्रों का सहयोग रहा, उन सभी का मैं तहे दिल से आभारी हूँ।

शोधार्थी
विवेकानन्द